रिकॉर्ड :– जो पिया के साथ..... "ॐ" पिताश्री 25/8/1965

ओम् शान्ति। इस ज्ञानमार्ग में गीतों–कविताओं–डायलोकों की भी ज़रूरत नहीं है। यह सब भक्तिमार्ग में चलता है। यहाँ तो हैं समझ की बातें। हर बात को बुद्धि से समझना है और है भी बहुत सहज। यानी यह ज्ञान बहुत सहज है। एक भी प्वाइंट से मनुष्य पुरुषार्थ करने लगते हैं। गीत सुनने वा कविता बनाने की कोई ज़रूरत नहीं है। गृहस्थ व्यवहार में रहना है, धंधा–धोरी करना है। बाप कहते हैं वो सब करते; परन्तु तुम मेरे से वर्सा कैसे ले सकते हो वो समझाते हैं। उठते–बैठते, सब कुछ करते चुप रहना है। अन्दर में विचार चलते रहें। बाप ने समझा दिया है बात बिल्कुल सहज है समझाने की। नई दुनिया पुरानी होने में समय लगता है। फिर पुराने से नए बनाने में इतना समय नहीं लगता है। बच्चों को समझाया गया है नई सृष्टि बाप रचते हैं। नए से फिर पुरानी होती है। सुख और दुख की दुनिया बनी हुई ज़रूर है; परन्तु सुख कौन देते हैं, दुख कौन देते हैं, यह किसको भी पता नहीं है। बनी–बनाई भी ज़रूर है। इस दुनिया से हम निकल नहीं सकते। इनको कहा जाता है ड्रामा। नाटक के बदली ड्रामा कहना अच्छा लगता है। नाटक जो होता है उनमें बदल–सदल हो सकती है। कोई को निकाल सकते हैं, कोई को एड कर सकते हैं। आगे नाटक थे। वाइसकोप बाद में निकले हैं। वाइसकोप में जो फिल्म शूट हुई वो ही रिपीट होगी। यह वाइसकोप निकला है इस ज्ञान को भी इस द्वारा पूरा समझने लिए। नाटक में फर्क हो जाता है। वाइसकोप में फर्क नहीं हो सकता। इसलिए ड्रामा नाम ही ठीक है। एक स्टोरी है नई पावन दुनिया और पुरानी पतित दुनिया की। सिर्फ मनुष्यों को यह पता नहीं है कि दुनिया की आयु कितनी है। बहुत लम्बी–चौड़ी आयु दे दी है। मनुष्य कुछ भी समझ नहीं सकते। नई दुनिया में कितने समझदार, धनवान, पवित्र थे। सर्वगुण सम्पन्न..... थे। बाबा आज क्यों समझा रहे हैं कि बच्चे भी जाकर ऐसे–2 भाषण करें। भारत की पहली–2 महिमा करनी चाहिए। भारत को ऐसा किसने बनाया? वो भी महिमा निकलेगी प०पि०प० की, जिसको सभी याद करते हैं। याद क्यों करते हैं? क्योंकि पुरानी दुनिया में बहुत दुख है। आचार्य आदि को कुछ भी पता नहीं है। सतयुग–त्रेता को सुखधाम कहा जाता है। वो है ईश्वरीय स्थापना। फिर आधा कल्प जो दुख है वो है आसुरी स्थापना, जिसमें मनुष्य 5 विकारों में फँस पड़ते है। समझते भी हैं बाप लिबरेट करते हैं। जो लिबरेटर है वो फँसाने वाला थोड़े ही होगा। उनका नाम ही है दुख हर्ता, सुख कर्ता। उनके लिए हम दुख कर्ता नहीं कह सकते। यह किसको पता नहीं है कि दुख देने वाले 5 विकार हैं जिससे ही बाप आकर छुड़ाते हैं। यह भी बड़ी सहज समझने की बात है। सारी दुनिया में इस समय रावण राज्य है। सिर्फ लंका की बात नहीं है। भक्तिमार्ग की कैसी फालतू बातें हैं। कितने शास्त्र बनते हैं। विलायत में भी जो फिलासफर हैं, अनेक प्रकार की बड़ी–2 किताब बनाते रहते हैं। ढेर किताब हैं। उनमें नॉवल्स भी हैं। मनुष्यों के अपने–2 विचार हैं। जिसको जो बुद्धि में आया वो लिख देंगे। वैसे ही यह शास्त्र हैं। अपना–2 शास्त्र बना देते हैं। मनुष्यों को तो कुछ भी पता नहीं है। भगवानुवाच्य यह वेद–शास्त्र पढ़ना, यज्ञ–तप आदि करना, जो कुछ तुम करते आए हो वो सब उतरती कला है। जो कुछ तुमने बनाया है वह अपन को गिराने लिए। तुमको जो मत मिली है वो गिरने की; क्योंकि उतरती कला है। पावन दुनिया थी। अभी पतित दुनिया है। आधा कल्प नई दुनिया। जैसे 24 घण्टे होते हैं। 12 घण्टा बाद दिन पूरा हो फिर रात होती है। वैसे यह ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात गाया जाता है। विष्णु के दिन–रात नहीं कहेंगे। विष्णु कुछ जानता ही नहीं। यह कितनी गुह्य बातें हैं। सिवाय बाप के कोई समझा ना सके।

बहुत बच्चे हैं जो थोड़ी सर्विस करने से ही बड़ा अहंकार आ जाता है। समझते हैं हमारे जैसा कोई है नहीं। यह (साकार ब्रह्मा) जो कुछ सुनाते हैं वो हमको .....ता नहीं है। ऐसा देह–अभिमान

में मिजाज़ (चढ़) जाता है। पहाका है ना– चूहे को मिली हैडगरी तो अपन को पंसारी समझने लग पड़ते हैं। बाप समझाते हैं अभी तुमको तमोप्रधान से सतोप्रधान में जाना है। अभी अजन अपनी बादशाही थोड़े ही स्थापन हुई है। थोड़ा ज्ञान मिलने से ही मगरूरी बहुत आ जाती है। फिर बाबा में भी आँख नहीं डूबती। समझते, शिवबाबा तो शिवबाबा है। ब्रह्मा कुछ भी नहीं है। बाबा हमेशा कहते हैं, ऐसे समझो शिवबाबा ही समझाते हैं। समझते हैं यह ब्रह्मा क्या है! हमको तो शिवबाबा से लेना है। ब्रह्मा तो खुद भी कहते हैं ना हम कुछ नहीं जानते। ऐसे भी हैं, समझते हैं, हमारा तो शिवबाबा से योग है। ब्रह्मा से भी अपन को होशियार समझते हैं। बाप कितना सहज बच्चों को समझाते रहते हैं। सिर्फ शिवबाबा को याद करना है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। यह बातें भी तुम अबलाएँ ही समझ सकती हो। नई दुनिया और पुरानी दुनिया। नई दुनिया रचने वाला बाप है। नई दुनिया स्वर्ग था। फिर नर्क किसने बनाया? रावण। रावण कौन है, यह राज़ भी तुमको समझाया है। कोई विद्वान–पंडित आदि नहीं समझ सकते। वो तो कह देते हैं जगत मिथ्या। यह सब काल्पनीय है। वो जो शास्त्र आदि सुनाते हैं वो तो कह ना सकें कि यह कल्पना है वा राँग है। तुम समझा सकते हो। अगर जगत बना ही नहीं है तो तुम तब कहाँ बैठे हो? यह जो वर्ल्ड रिपीट होती रहती है उसकी पूरी नॉलेज चाहिए ना। नॉलेज ना होने कारण कह देते यह सब मिथ्या है। जिसने जो सुनाया सो सत्। बुद्धि में शास्त्रों का बड़ा भूसा भरा हुआ है। तुम तो एक बात में ही खुश होते हो। उन विद्वानों–पंडितों आदि को तो शास्त्रों का बहुत घमंड है। है कुछ भी नहीं। बाप तो बहुत अच्छी रीति समझाते हैं। आधा कल्प बाप ने वर्सा दिया। फिर रावण ने हराया है। यह खेल बना हुआ है। अभी भारत पर रावण का श्राप है। राम वर्सा देते हैं। कहते भी हैं– राम राज्य चाहिए। तो ज़रूर रावण राज्य है ना; परन्तु ऐसा समझते थोड़े ही हैं कि हम आसुरी रावण सम्प्रदाय हैं। तुम जानते हो वह है आसुरी सम्प्रदाय। यह है ईश्वरीय सम्प्रदाय। आसुरी सम्प्रदाय को ईश्वरीय सम्प्रदाय की पहचान नहीं है। सब नर्कवासी हैं। एक/दो को काटते रहते हैं। उनको पता ही नहीं है कि ईश्वर क्या चीज़ है। अपना घमण्ड कितना बड़ा है। तुम बच्चे जानते हो हम अभी ईश्वर के बने हैं और उनकी मत पर चल रहे हैं। कोई भी बड़े हाल में लैक्चर करो। समझाना है बाप ने नई दुनिया रची। स्वर्ग था। यह चित्र तो बहुत अच्छे हैं। सबके पास बड़े चित्र होने चाहिए। बड़े पर समझाना अच्छा होता है। चक्कर सामने खड़ा है। संगमयुग भी लगा हुआ है। कलियुग है काला पतित अर्थात् उनमें लोहे की खाद पड़ने से काले हो गए हैं। भारत कितना गोल्डन एज्ड था। अब फिर उनको आयरन एज से चेंज होना ही पड़े। उनकी स्थापना, इनका विनाश होना पड़े। गाया भी जाता है प०पि०प० त्रिमूर्ति है। त्रिमूर्ति का अर्थ कोई नहीं समझते हैं। रोड पर भी त्रिमूर्ति नाम रखे हुए हैं। वास्तव में त्रिमूर्ति हैं ब्र०वि०शं०। तीनों देवताएँ अलग–2 हैं। इन सबसे ऊँच ते ऊँच है प०पि०प० शिव। करन–करावनहार। उनको गुम कर दिया है। देवताओं से भी ऊपर तो वो निराकार भगवान ही है। जैसे बाप निराकार है हम आत्माएँ भी निराकार हैं। हम यहाँ आते हैं पार्ट बजाने। ल०ना० की डिनायस्टी थी। एक/दो पिछाड़ी राज्य करते आए हैं। तो स्वर्ग की महिमा सुनानी पड़े। भारत कितना धनवान था। प्युरिटी–पीस–प्रोसपर्टी थी। कब अकाले मृत्यु नहीं होती थी। नई दुनिया थी। बाप ने ही नई दुनिया रची। अब तो पुरानी आयरन एज्ड दुनिया है ना। कितने दुखी हैं। भारत श्रेष्टाचारी था। अब वो ही भारत भ्रष्टाचारी है। प्रश्न उठता है भ्रष्टाचारी किसने बनाया? रावण ने। सतयुग में रावण राज्य हो नहीं सकता। यह है नर्क, डेविल वर्ल्ड। सतयुग ही डीटी वर्ल्ड। आधा कल्प डीटी राज्य चलता है, फिर उतरती कला में आते हैं। उतरते–2 फिर डेविल बनना

ही है। फिर यह झूठे शास्त्र आदि सब बन जाते हैं। भारत बिल्कुल ही कंगाल बन जाता है। तो नई दुनिया और पुरानी दुनिया का कान्ट्रास्ट बतलाना चाहिए। नई दुनिया में 16 कला सम्पूर्ण होते हैं। अभी पुरानी दुनिया में कोई कला ना रही है। फिर बाप 16 कला बनाते हैं। कहते हैं– बच्चे, मनमनाभव। माम् एकम् याद करो। यह है भगवानुवाच्य। भगवान तो निराकार ही है। उनको ही पतित–पावन, ज्ञान सागर कहते हैं। कृष्ण को ज्ञान सागर नहीं कह सकते। फिर गीता में कृष्ण का नाम क्यों डाल दिया है? कोई द्वारा सा० हुआ तो कहेंगे– बस, यह तो कृष्ण का रूप है। (अरविन्द घोष का मिसाल) सन्यासी लोग भी अंदर बहुत छिपे रहते हैं। वेश बदल देते हैं। उन्हों की भी सी०आई०डी० रखते हैं। जो अंदर घुस जाँच करते रहते हैं। तो अरविन्द में कोई ताकत नहीं थी। कोई आत्मा ने आकर प्रवेश किया तो उनका प्रभाव निकल पड़ा। सब एक्टर्स का ड्रामा में नम्बरवार पार्ट है। तुम बच्चों में ताकत बहुत है जो तुम आलराउण्ड पार्ट बजाते हो। तो दुनिया में अनेक प्रकार के हैं। मनुष्यों का भाव बैठ जाता है। फिर भी बीमारी, रोग, दुख आदि तो होता ही है। भाव किसमें बैठ जाता है तो फिर उनका लॉकेट बनाय गले में डाल देते हैं। गुरु का लॉकेट पहन गुरु को याद करते रहते हैं। ईश्वर सर्वव्यापी है। बस। अगर ईश्वर सर्वव्यापी है फिर तो गुरु उनमें कोई फर्क नहीं हुआ। ऐसे ढेर हैं समझने वाले। तो बच्चों को पुरानी दुनिया और नई दुनिया का भी राज़ समझाया। बाप नई दुनिया रचते हैं। अभी सब बाप को बुलाते रहते हैं– हे पतित–पावन आओ, आकर पावन दुनिया स्थापन कराओ या हमको पावन बनाय ले चलो। धाम हैं दो। निर्वाणधाम और सुखधाम। सन्यासी तो नॉलेज देते ही हैं मुक्ति के लिए। जीवनमुक्ति के लिए दे ना सके। तुम देवी–देवता धर्म वाले ही जो पुजारी बने हैं फिर पूज्य बनना है। भारतवासी ही कृष्ण को याद करते हैं। वो है कृष्णपुरी। यह है कंसपुरी। श्री कृष्ण है सतयुग का प्रिंस। प्रिंस–प्रिंसेज़ की महिमा है। कुमार–कुमारी की महिमा होती ही है; क्योंकि पवित्र रहते हैं। नहीं तो कृष्ण से राधे की जास्ती होनी चाहिए; परन्तु यह किसको पता नहीं है। फिर कृष्ण, फिर राधे क्यों? कहते भी हैं राधे–कृष्ण। कृष्ण–राधे मुश्किल कोई कहेंगे। समझते हैं बच्चा वर्से का हकदार बनता है। इसलिए जास्ती कृष्ण की महिमा दिखाई है। यह भी समझने की बातें हैं। कृष्ण बनेंगे तो वर्से का हकदार बनेंगे। यहाँ तुम सब हो बच्चे। बाप कहते हैं जैसा पुरुषार्थ करेंगे उतना अपने लिए ही वर्सा पावेंगे जन्म–जन्मांतर के लिए। जितना चाहे पुरुषार्थ करो। बाप आत्माओं से बात कर रहे हैं। पुरुषार्थ से तुम ऊँच वर्सा प्राप्त कर सकते हो। नज़र आत्मा पर ही रहती है। विलायत में बच्ची पैदा होती है तो खुशी होती है। यहाँ बच्चा होवें तो खुश होंगे। हरेक की अपनी–2 रसम–रिवाज़ है। तो बच्चों को अब यह तो बुद्धि में है वर्सा बेहद का बाप देते हैं। फिर श्राप माया देती है। बेहद का बाप वर्सा दे रहे हैं। वो ही गॉड फादर, स्वर्ग का रचयिता है। कृष्ण के लिए कोई कह ना सके। प०पि०प० ही पतितों को पावन बनाय नर्क को स्वर्ग बनाते हैं। सहज राजयोग और ज्ञान सिखलाते हैं। ऐसे–2 भाषण में तुम समझा सकते हो। तुम सिद्ध कर बता सकते हो। गीता में कृष्ण का नाम डाल खण्डन कर दिया है। गीता का भगवान तो बाप है, ना कि बच्चा। कृष्ण तो रचना है। उनको यह वर्सा बाप से मिला। कैसे? सो बैठ समझो। कोई भी बात उठाए उनपर समझाने लग जाओ। पुरानी दुनिया, नई दुनिया पर समझाने से उसमें सब आ जाता है। अभी अनेक धर्म हैं। उनके बीच फिर एक आदि सनातन देवता धर्म की स्थापना हो रही है। कितना समझाया जाता है। इन 5 विकारों को छोड़ो। घर में भी किस पर क्रोध ना करो। ख्याल आना चाहिए, जैसे कर्म हम करेंगे, हमको देख फिर और करेंगे। मैं विकारी बनूँगा तो मुझे देख और भी विकारी बनेंगे। स्त्री को एडॉप्टेड किया है उनको ख(ड्डे) में गिराने लिए थोड़े ही किया है। बाप फरमान करते हैं अब पवित्र बनो। स्त्री को भी पवित्र बनाओ। कोई पर क्रोध ना करो। तुमको देख वो भी करने लग पड़ेंगे। मेल तो रचयिता है। तो स्त्री को भी पकड़ना चाहिए। समझाना पड़े। फिर अगर तकदीर में ही ना होगा तो क्या कर सकते। समझाना है, बाप कहते हैं पवित्र बनो तो पवित्र दुनिया के मालिक बनोगे। बाप

समझाते हैं तुम... 84 जन्म कैसे लेते हैं। पहले तुम सतोप्रधान, पावन थे। फिर रजो–तमो बने। अब फिर मुझे याद करो तो सतोप्रधान, पावन बनोगे। गीता के वर्शन्स ही भगवान कह रहे हैं। गीता में कृष्ण का नाम डालने से उनकी सारी जीवन कहानी खतम हो जाती है। बाबा ने समझाया है तुम लिख सकते हो यह गीता तो वर्थ नोट पैनी है। इन(को) पढ़ने से भारत कंगाल बन पड़ा है। समझाने की हिम्मत चाहिए ना। कइयों को फिर उल्टा घमंड आ जाता है, हम बहुत होशियार हैं। तो देहअभिमान में आए गिर पड़ते हैं। समझते हैं, हम तो शिवबाबा के हैं। यह नहीं समझते, इनकी दिल से अगर उतरे तो उनकी दिल से भी उतर ही जावेगी। बाप को याद ना करने से उल्टे काम ही करेंगे। उनकी दिल से भी उतर पड़ेंगे। बाप तो सब कुछ समझाते रहते हैं। बहुत बच्चे समझते हैं हम तो शिवबाबा को ही जानते हैं। उनसे ही कल्याण होना है। भूल करते हैं तो बाबा इशारा देते हैं; परन्तु थोड़ा भी समझाने से लून–पानी हो जाते हैं। लून–पानी थोड़े ही बनना है। समझाया जाता है, ऐसे ना करो। कोई–2 तो ऐसे हैं जो एक/दो को रिगार्ड देने भी ना आता। अपन से बड़े साथ तुम–2 कह बात करते हैं। बाप कहते हैं– बच्चे, इस सेन्टर से तुम बदली हो फलाने सेन्टर पर जाओ, तो भी बाप का फरमान नहीं मानते। समझते हैं, यह बाबा कहते हैं। शिवबाबा थोड़े ही कहते हैं। पता नहीं शिवबाबा उनको कैसे कहेंगे! क्या ऊपर से रड़ियाँ मारेंगे। उनको कहा जाता है महान मूर्ख। ज्ञान शिवबाबा देते हैं, तुम उनका फरमान समझो ना। वो बाबा कहते हैं तुम फलाने सेन्टर पर जाकर रेख–देख करो। सेन्सीबुल बच्चों को तो शौक होना चाहिए– फलाना सेन्टर गिरा हुआ है, हम उनको जाए उठाऊँ। बिगर कहे जो करे सो देवता। कहे से करे सो मनुष्य। कहने से भी ना करे तो...। अच्छा, बापदादा का सिकीलधे बच्चों प्रति यादप्यार और गुडमॉर्निंग। ॐ